शून्य अंक प्राप्त करने वाले समूह पर ध्यान देना

रश्मि पालीवाल

पृष्ठभूमि

एकलव्य एक ग़ैर-सरकारी संगठन है जो मध्यप्रदेश में 1982 से स्कूली शिक्षा में नवाचारों की दिशा में काम कर रहा है। यह लेख मध्यप्रदेश के एक आदिवासी ब्लॉक के 34 गाँवों में प्राथमिक स्कूल के बच्चों के लिए, 2015-19 के बीच *एकलव्य* द्वारा किए गए हस्तक्षेप पर आधारित है। *एकलव्य* का लक्ष्य यह सुनिश्चित करना था कि चार साल तक बच्चों के साथ कार्य करने के फलस्वरूप उनकी भाषा और गणित की योग्यता में सुधार हो, उनके प्राप्तांकों में संवर्धन हो। कुछ हद तक सफलता मिली भी : हालाँकि, हमने पाया कि कुछ बच्चे जो स्कूल के साथ-साथ *एकलव्य* केन्द्रों में भी जाते थे, वे साल भर तक स्कूल में उपस्थित रहने के बावजूद शून्य अंक के स्तर पर ही बने रहे। हम इस विषय पर चर्चा करेंगे कि *एकलव्य* ने इस मुद्दे की जाँच कैसे की और सभी बच्चों को सीखने में मदद करने के लिए किन सम्भावित कदमों की परिकल्पना की गई।

एकलव्य सहित कई और संगठन भी ऐसे हैं जो सभी बच्चों को सीखने में सक्षम बनाने के लिए बहुत आशा और ईमानदारी के साथ काम करते हैं। हम जिन विषयों पर ध्यान देते हैं, वे इस प्रकार हैं : अभिनव सामग्रियों, गतिविधियों और तरीक़ों को विकसित करना, प्रशिक्षण, कार्यशालाओं और शिक्षाविदों तथा शिक्षकों के साथ फॉलोअप बैठकें करना, बच्चों के अधिगम के आकलन के लिए वैकल्पिक और समग्र तरीक़े अपनाना आदि। इसके अलावा, पिछले पाँच वर्षों में मैंने डाटा संधारण और उसके अध्ययन से होने वाले लाभों के बारे में भी सीखा ताकि इन प्रयासों में सुधार करके उन्हें अधिक प्रभावी बनाया जा सके।

कार्य-प्रणाली

मैंने अक्टूबर 2015 से मार्च 2019 तक जमशेदजी टाटा ट्रस्ट के तत्वावधान में छिन्दवाड़ा जिले के तामिया ब्लॉक में प्रारम्भिक शिक्षा के सार्वभौमिकरण की परियोजना में भाग लिया। इसे 34 गाँवों में आयोजित किया गया था, जिसमें 37 प्राथमिक स्कूलों के लगभग 3500 बच्चे और 15 माध्यमिक स्कूलों के लगभग 1800 बच्चे थे। *एकलव्य* की 6 लोगों की कोर टीम ने 62 लोगों की फील्ड टीम के साथ काम किया; जिसमें 39 स्थानों में प्राथमिक स्तर के लिए स्कूल के बाहर (आउट-ऑफ-स्कूल) सहायता केन्द्रों का दो घण्टे के लिए संचालन करना शामिल था। इसके अतिरिक्त साप्ताहिक रूप से स्कूलों को पुस्तकालय-संचालन, गतिविधि केन्द्रों के उपयोग, शिक्षण-अधिगम सामग्री का उपयोग और शिक्षक-विकास प्रक्रियाओं में मदद दी गई।

कार्य के प्रभाव को देखने के लिए, स्कूल और *एकलव्य* के आउट-ऑफ-स्कूल केन्द्रों (जिन्हें शिक्षा प्रोत्साहन केन्द्र कहा जाता है) में प्रत्येक बच्चे की उपस्थिति के आँकड़ों को एकत्र करके उनकी समीक्षा की गई। अधिगम-स्तर पर हुए प्रभाव का अध्ययन करने के लिए 34 गाँवों में से 17 गाँवों के सैम्पल का अध्ययन किया गया। कक्षा III और कक्षा V के बच्चों का आकलन किया गया।

मूलत: प्रारम्भिक योजना यह थी कि परियोजना के बाद के प्रत्येक वर्ष में इन बच्चों द्वारा प्राप्त अंकों में सुधार हुआ है या नहीं, इस बात का पता लगाना। इसके पीछे की हमारी सोच यह थी कि *एकलव्य* द्वारा बच्चों, शिक्षकों और माता-पिता को निरन्तर शैक्षिक मदद देने के कारण, बाद के प्रत्येक बैच के अधिगम-स्तर में सुधार होना चाहिए। यानी फरवरी 2016 में तीसरी कक्षा के किसी बच्चे को सिर्फ़ कुछ महीनों के लिए शैक्षिक मदद मिली होगी; 2017 में तीसरी कक्षा के बच्चे को एक साल तक शैक्षिक मदद का लाभ मिला होगा; 2018 में तीसरी कक्षा के बच्चे को दो साल तक और 2019 में तीन साल तक शैक्षिक मदद मिली होगी। हमारा उद्देश्य यह सुनिश्चित करना था कि तीसरी कक्षा के सभी बच्चे पहली कक्षा की हिन्दी और गणित की बुनियादी योग्यता हासिल कर चुके हों और पाँचवीं कक्षा के सभी बच्चे तीसरी कक्षा की हिन्दी और गणित की बुनियादी योग्यता हासिल कर चुके हों। *एकलव्य* की कोर टीम और फील्ड टीम के कुछ सदस्यों द्वारा प्रत्येक वर्ष फरवरी-मार्च में आयोजित लिखित और मौखिक अभ्यासों के माध्यम से इनका परीक्षण किया गया। हर साल तीसरी कक्षा के लगभग 150 बच्चों और पाँचवीं कक्षा के 150 बच्चों का परीक्षण किया गया। इन सभी वर्षों में बच्चों के विभिन्न बैचों को दिए गए टेस्ट पेपर/कार्य समान थे।

क्या हर बच्चे ने सीखा?

हमारे निष्कर्ष

औसत अंक

तीसरी और पाँचवीं कक्षा के लगातार चार बैचों के अध्ययन से प्राप्त तुलनात्मक परिणाम नीचे दिए गए हैं।

गणित कक्षा III	औसत अंक - प्रतिशत में	विद्यार्थियों की संख्या
एंड-लाइन 2018-19	68%	158
एंड-लाइन 2017-18	53%	141
मिड-लाइन 2016-17	42%	161
बेस-लाइन 2015-16	33%	161

गणित कक्षा V	औसत अंक - प्रतिशत में	विद्यार्थियों की संख्या
एंड-लाइन 2018-19	45%	188
एंड-लाइन 2017-18	34%	165
मिड-लाइन 2016-17	31%	165
बेस-लाइन 2015-16	28%	152

भाषा कक्षा III	औसत अंक - प्रतिशत में	विद्यार्थियों की संख्या
एंड-लाइन 2018-19	38%	154
एंड-लाइन 2017-18	34%	136
मिड-लाइन 2016-17	30%	161
बेस-लाइन 2015-16	18%	151

भाषा कक्षा V	औसत अंक - प्रतिशत में	विद्यार्थियों की संख्या
एंड-लाइन 2018-19	59%	191
एंड-लाइन 2017-18	49.4%	162
मिड-लाइन 2016-17	49.2%	164
बेस-लाइन 2015-16	41.6%	141

बेस-लाइन (2016), मिड-लाइन (2017), एंड-लाइन-1 (2018) और एंड-लाइन-2 (2019) । यह दर्शाता है कि चार वर्षों के दौरान बच्चों के प्रदर्शन में सुधार हुआ क्योंकि औसत अंकों में वृद्धि हुई है।

शून्य अंक प्राप्त करने वाले बच्चे

हमने प्रत्येक टेस्ट पेपर में 0,1,2,3,4 अंक पाने वाले बच्चों के प्रतिशत को देखा। हमने देखा कि पाँचवीं कक्षा में, गणित विषय को छोड़कर, 0 अंक पाने वाले बच्चों का प्रतिशत चार वर्षों में सामान्यतः कम हुआ था लेकिन पाँचवीं कक्षा के भाषा विषय के नमूने में उतना कम नहीं हुआ था। उदाहरण के लिए, तीसरी कक्षा के हिन्दी के नमूने में, 2016 में शून्य अंक पाने वालों में 65% बच्चे, 2017 में 50%, 2018 में 45% और 2019 में 39% बच्चे थे। तीसरी कक्षा के बैचों में, शून्य अंक पाने वाले बच्चों का प्रतिशत चार सालों में 30, 27, 18 और 9 था। इस प्रकार कुल मिलाकर आँकड़ों से यह पता चला कि जैसे-जैसे परियोजना आगे बढ़ी, हर साल सीखने वाले बच्चों की संख्या बढ़ रही थी।

उन बच्चों के बारे में जानना जिन्होंने नहीं सीखा

मिड-लाइन अध्ययन के परिणामों की समीक्षा करने के बाद जब हमने पाया कि कई बच्चों को शून्य अंक मिले हैं तो हमने उनके बारे में अधिक जानने का फैसला किया। हमने उन बच्चों के साथ परीक्षण को दोहराने का फैसला किया, जिन्होंने 2016 में, बेसलाइन टेस्ट में शून्य अंक प्राप्त किए थे। यह बच्चे पाँचवीं और सातवीं कक्षा में पहुँच गए थे। तो उदाहरण के लिए, मार्च 2016 में किए गए बेसलाइन टेस्ट में तीसरी कक्षा के 90 बच्चे शून्य स्कोर में थे। नवम्बर 2017 तक, इनमें से 88 बच्चों की पुनः परीक्षा ली गई और परीक्षा के लिए वही पेपर दिया गया (वे तब पाँचवीं कक्षा में थे)। उनमें से 58 बच्चों के सीखने के स्तर में सुधार हुआ था और उन्हें बेहतर अंक मिले थे लेकिन उनमें से 30 ने फिर से शून्य स्कोर किया।

उपर्युक्त आँकड़ों के आधार पर, हमने उन विद्यार्थियों की एक सूची बनाई जो स्कूल और शिक्षा प्रोत्साहन केन्द्र में एक वर्ष से अधिक समय से जा रहे थे लेकिन वे किसी भी दक्षता को सीखने में सक्षम नहीं हो पाए थे। हमने स्कूल में उनकी

उपस्थिति पर भी नज़र रखी। ट्रैकिंग प्रणाली के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं :

नो-मूवमेंट लिस्ट (2016 और 2017 में 0 से 0 स्कोर)

2016 में 0 अंक प्राप्त विद्यार्थी	स्कूल में उपस्थिति 2015-16	शिक्षा प्रोत्साहन केन्द्र में उपस्थिति 2015-16	स्कूल में उपस्थिति 2016-17	शिक्षा प्रोत्साहन केन्द्र में उपस्थिति 2016-17	पुन: परीक्षण स्कोर 0 (अक्टूबर 2017)
अमिता	80%	75%	79%	82%	गणित
सोनम	68%	61%	59%	66%	गणित
अमृता	70%	63%	67%	64%	गणित
रानी	62%	55%	66%	74%	गणित
मनीष	73%	68%	56%	64%	गणित
जयकिशन	73%	67%	NA	NA	दोनों में

केस स्टडी

यह पता लगने के बाद हमने गाँव के बच्चों, उनकी देखभाल करने वालों और शिक्षकों के साथ बैठक की। इस प्रकार उन 30 बच्चों पर चर्चा की गई और घर, स्कूल और शिक्षा प्रोत्साहन केन्द्र की समग्र गतिविधियों में उनकी भागीदारी को दर्ज़ किया गया। टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंसेस (TISS) के चार विद्यार्थी मार्च 2018 के अन्तिम सप्ताह में अपने रूरल प्रेक्टिकम के लिए हमारे साथ जुड़े, उन्होंने भी केस स्टडी में मदद की। नीचे कुछ उदाहरण दिए गए हैं।

केस स्टडी 1

लक्ष्मी के शिक्षक के अनुसार वह अपने बारे में कुछ बुनियादी जानकारी लिख सकती है, जैसे अपना नाम, अपने माता-पिता का नाम, अपने गाँव का नाम आदि। वह चित्रों की सही पहचान भी कर सकती है, लेकिन मात्रा वाले शब्द लिखने में उसे मुश्किल होती है। गणित में वह 100 तक गिन सकती है और बुनियादी जोड़ और घटाव कर सकती है। शिक्षा प्रोत्साहन केन्द्र के उसके शिक्षक ने हमें बताया कि वह कक्षा में नियमित रूप से आती है और उसकी उपस्थिति 82% है। उसकी माँ सोनम एकल अभिभावक हैं और परिवार की कमाने वाली एकमात्र सदस्य हैं। जब लक्ष्मी सिर्फ़ नौ महीने की थी तब उसके पिता का निधन हो गया था। सोनम कभी-कभी मौसमी मज़दूरी के लिए पास के शहर जैसे पिपरिया जाती हैं। इसके अलावा अपनी आय बढ़ाने के लिए वह सूखे महुआ भी बेचती हैं। महुआ इकट्ठा करने के लिए वह अपने बच्चों को साथ नहीं ले जातीं। जब सोनम काम पर जाती हैं तो लक्ष्मी और उसका बड़ा भाई, जो नौवीं कक्षा में पढ़ता है, घर पर अकेले रहते हैं और अपने लिए खाना ख़ुद बनाते हैं। माँ के अनुसार लक्ष्मी सुबह लगभग 5 बजे उठती है, दो घण्टे पढ़ती है और उसके बाद शिक्षा प्रोत्साहन केन्द्र और स्कूल जाती है। लक्ष्मी की माँ ने हमें बताया कि नौवीं कक्षा में पढ़ने वाला उनका बेटा भी पढ़ाई में काफ़ी कमज़ोर है और वह ठीक से पढ़ या लिख नहीं सकता। उन्होंने यह भी कहा कि प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक ज़रा लापरवाह हैं और वे अक्सर नशे में स्कूल आते हैं। लक्ष्मी अगर थोड़ा-बहुत जानती है तो वह सिर्फ़ इसलिए कि वह शिक्षा प्रोत्साहन केन्द्र में जा रही है और उसके अकादमिक प्रदर्शन में भी सुधार हुआ है।

केस स्टडी 2

सुनील स्कूल में नियमित रूप से नहीं आता। जब वह चौथी कक्षा में था, तब उसकी उपस्थिति बहुत ही कम थी और पाँचवीं कक्षा में तो और भी कम। भले ही सुनील अब पाँचवीं कक्षा में है, पर वह वर्णमाला और संख्याएँ पहचानने में असमर्थ है। वह अपनी परीक्षा की उत्तर-पुस्तिका में अपने माता-पिता का नाम और तारीख़ सही ढंग से नहीं लिख पाता। उसके शिक्षक का कहना है कि उसके सीखने का स्तर पहली कक्षा के विद्यार्थी के बराबर है। किन्तु वह ड्राइंग में बहुत अच्छा और रचनात्मक है। सुनील के माता-पिता का कहना है कि वे उसे स्कूल तक छोड़कर आते हैं, लेकिन वह बीच-बीच में अपने दोस्तों के साथ खेलने के लिए भाग जाता है और जब वे उसे स्कूल जाने के लिए मजबूर करते हैं तो उसका रवैया बहुत आक्रामक हो जाता है।

सुनील का सम्बन्ध अन्य पिछड़े वर्ग के यादव परिवारों से है, जो समुदाय के अधिकांश ग्रामवासियों की तुलना में आर्थिक रूप से बेहतर हैं। सुनील पक्के घर में रहता है। उसके परिवार के पास मवेशी हैं तथा उनकी आय का प्रमुख स्रोत दूध बेचना है। घर में सारा काम मिलकर किया जाता है - सुनील की माँ भैंसों का दूध दुहती हैं, वह और उसका भाई मवेशियों को चारा-दाना खिलाते हैं तथा उनके पिता दूध और दूध के उत्पाद बेचने के लिए पिपरिया जाते हैं। उसका परिवार प्रति माह

लगभग दस हज़ार रुपये कमाता है, जो उनके खेती-बाड़ी करने वाले पड़ोसियों की आय से लगभग दोगुना है। सुनील और उसका भाई जयराम महुआ, तेन्दू और इमली इकट्ठा करने के लिए जंगल में जाते हैं, जिसे वे बाजार में 30-40 रुपये किलो में बेचते हैं। इस परिवार के पास ज़मीन भी है और नियमित आय भी।

सुनील के दोस्तों का कहना है कि शिक्षा महत्त्वपूर्ण है, शिक्षक अच्छी तरह से पढ़ाते हैं और उन्हें मारते नहीं हैं, लेकिन वे सिर्फ़ इसलिए स्कूल नहीं आते हैं क्योंकि उन्हें पढ़ाई में कोई दिलचस्पी नहीं है। सुनील का बड़ा भाई सात किलोमीटर दूर एक मिडिल स्कूल में पढ़ने जाता है। जब 2016 में सुनील पाँचवीं कक्षा में था तो उसका स्कोर भी शून्य अंक था। 2017 के अन्त में, जब वह सातवीं कक्षा में था, तो उस समय किए गए पुनः परीक्षण में उसका स्कोर फिर से शून्य ही था।

अपने निष्कर्षों पर चिन्तन

तामिया एक वन्य और पहाड़ी ब्लॉक है, जिसमें ज़्यादातर गोंड और भारिया जनजाति के लोग रहते हैं। ऊपर दिए गए उदाहरणों में लक्ष्मी के परिवार जैसे कई परिवार मामूली से किसान हैं, जो मज़दूरी के लिए मौसमी प्रवास पर निर्भर रहते हैं। हम इस पृष्ठभूमि के बच्चों के प्रदर्शन की जाँच कर रहे हैं और उनमें से भी ऐसे बच्चों को लक्ष्य कर रहे हैं, जिनके अधिगम में सुधार नहीं हुआ, जबकि उसी सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि से आने वाले कई बच्चों में सुधार देखने को मिला।

दूसरी ओर हम उच्च सामाजिक स्थिति तथा अपेक्षाकृत बेहतर आर्थिक स्थिति वाले परिवारों से आने वाले बच्चों के सम्पर्क में भी आए (जैसे कि सुनील) जो बहुत निचली कक्षाओं की दक्षताओं को भी नहीं सीख पाए। कुछ मामलों में यह भी देखने को मिला कि उनके भाई-बहनों को भी चुनौतियों का सामना करना पड़ा था। हालाँकि कुछ ने सातवीं कक्षा में आते-आते अपने प्रदर्शन में सुधार करने में कामयाबी हासिल की, लेकिन कुछ अन्य बच्चों में बमुश्किल ही सुधार दिखाई दिया। कई मामलों में माता-पिता ने अपने बच्चों की स्कूली शिक्षा को गम्भीरता से लिया लेकिन उन्हें हताशा महसूस हुई। पर उन्होंने हमेशा ही शिक्षकों को दोष नहीं दिया; बल्कि कुछ शिक्षकों को उनके प्रयासों के लिए सराहा भी। इसके अलावा हमें ऐसे उदाहरण भी मिले जहाँ माता-पिता दोनों ने प्राथमिक स्तर की स्कूली शिक्षा प्राप्त की थी; वे व्यवसाय में कार्यरत थे या सरकारी नौकरी करते थे, लेकिन हमारी दो साल की शैक्षिक मदद के दौरान उनका बच्चा शून्य स्कोर की श्रेणी में ही था।

आँकड़ों और केस स्टडी का विश्लेषण करने से हमने यह जाना कि कोई ऐसा सरल कारण नज़र नहीं आ रहा था जिससे इस बात को समझा जा सके कि बच्चों में अधिगम कम क्यों हो रहा था। एक सम्भावना पर हमने विचार किया कि शायद बच्चों के उस समूह विशेष में अधिगम सम्बन्धी विशिष्ट अक्षमता रही हो। इस मुद्दे पर हमने जो कुछ पढ़ा, वह हमारे अवलोकन को पुष्ट कर रहा था। उदाहरण के लिए, सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि का विशिष्ट अधिगम अशक्तता(एसएलडी) के साथ कोई सम्बन्ध नहीं है। अन्य निष्कर्ष इस प्रकार थे :

- एक हद तक विशिष्ट अधिगम अशक्तता का कारण यह हो सकता है कि परिवार के सदस्यों को आनुवांशिक रूप से तंत्रिका सम्बन्धी समस्या हो।
- अधिगम की अशक्तता को अन्य विशेष आवश्यकताओं, जैसे अति-सक्रियता और ध्यान की कमी (अटेंशन डेफिसिट) के साथ जोड़ा जा सकता है।
- विशिष्ट अधिगम अशक्तता का बुद्धिमत्ता के स्तर से कोई सम्बन्ध नहीं है।
- हो सकता है कुछ बच्चों में विशिष्ट अधिगम अशक्तता पढ़ने-लिखने में कठिनाई के रूप में प्रकट हो, लेकिन संख्यात्मक कार्यों में नहीं, या इसका उल्टा हो सकता है या कुछ मामलों में दोनों ही प्रकार की कठिनाइयाँ एक साथ हो सकती हैं।

हमने यह भी महसूस किया कि जिन बच्चों ने सीखने में बहुत कम प्रगति दिखाई थी, उनमें से कुछ बच्चों की कक्षा में उपस्थिति ज़्यादा थी तो कुछ की कम।

अब एक चुनौतीपूर्ण सवाल यह था कि जो स्थिति हमारे सामने है और जिसे हम ज़्यादा नहीं समझ पा रहे हैं, उसमें हमारी भूमिका क्या हो। *एकलव्य* के क्षेत्र-स्तरीय शिक्षकों द्वारा किए गए प्रयासों पर माता-पिता ने ध्यान दिया था और सराहा भी था, लेकिन क्या इन प्रयासों को उन बच्चों की विशिष्ट आवश्यकताओं को सम्बोधित करने के लिए अनुकूलित किया जा सकता है जो किन्ही ख़ास प्रकार की चुनौतियों का सामना कर रहे हैं? जैसे-जैसे हमने अधिगम की विशिष्ट कठिनाइयों के बारे में पढ़ा, वैसे-वैसे हम इस बात को जान गए कि यद्यपि इस अक्षमता की पुष्टि 8 वर्ष की आयु के बाद ही होती है, जब मस्तिष्क पूरी तरह से परिपक्व हो जाता है, लेकिन यदि इस परिपक्वता से पहले शैक्षणिक हस्तक्षेप उपलब्ध हो तो वह हस्तक्षेप सबसे अधिक फलदायी होता है और तंत्रिका तंत्र में उपयुक्त अनुकूलन को मज़बूत किया जा सकता है। एक बार परिपक्वता पूरी हो जाए तो प्रगति असम्भव तो नहीं लेकिन हाँ, धीमी और अधिक कठिन हो सकती है।

इन चिन्तनों के बाद हमें एहसास हुआ कि हमें अपनी ऊर्जा और अपना ध्यान शुरुआती वर्षों – यानी कक्षा I, II और III पर केन्द्रित करना चाहिए। अपने हस्तक्षेप के प्रभाव सम्बन्धी अध्ययन के आँकड़ों को देखने से भी हमें यही लगा कि शुरुआती हस्तक्षेप का महत्त्व बहुत अधिक है। इसने इस सम्भावना की ओर इशारा किया कि जिन लोगों को अपने

शुरुआती वर्षों में *एकलव्य* की शैक्षिक मदद का लाभ मिला, वे उन लोगों की तुलना में बेहतर थे, जिनकी उम्र 8 साल से अधिक थी और जो पहले से ही तीसरी, चौथी और पाँचवीं कक्षा में थे। साक्षरता प्राप्त करने में प्रभावी प्रारम्भिक हस्तक्षेप की महत्त्वपूर्ण भूमिका को सफल परियोजनाओं द्वारा भी बल मिला, उदाहरण के लिए राजस्थान में प्रारम्भिक साक्षरता संवर्धन संगठन (ऑरगनाइज़ेशन फॉर अर्ली लिट्रेसी प्रमोशन) द्वारा संचालित परियोजना।

अपने हस्तक्षेप में परिवर्तन करना

अपनी सीख का परीक्षण करने के लिए, हमने तामिया के 10 प्राथमिक स्कूलों में एक प्रायोगिक कार्यक्रम आयोजित किया जिसमें :

- फील्ड के 10 प्रमुख व्यक्तियों ने हर रोज़ केवल कक्षा I और II के बच्चों के साथ काम किया।
- यह कार्य एक संरचित साक्षरता दृष्टिकोण के साथ, शब्दों के एक सेट से दूसरे सेट में व्यवस्थित रूप से आगे बढ़ रहा था तथा कविताओं, कहानियों, चित्र-पुस्तकों, पोस्टर, फ्लैशकार्ड, मौखिक चर्चा, ड्राइंग आदि से समृद्ध था।
- फील्ड के लोगों ने गतिविधियों की सहायता से ध्वनिशास्त्र सम्बन्धी जागरूकता पर ध्यान केन्द्रित किया जिससे कि ध्वन्यात्मक रूप से ध्वनियों को लिखित प्रतीकों से जोड़ने से पहले मौखिक-श्रव्य स्तर पर ध्वनियों को संसाधित किया जा सके। गतिविधियाँ इस प्रकार की थीं कि बच्चों को एक शब्द देकर उनसे कहा जाता कि वे वैसे ही तुक वाले अन्य शब्दों के बारे में सोचें (आता, जाता, खाता, गाता...), और शब्द के हरेक अक्षर के साथ ताली बजाते चलें (आ-ताली-ता-ताली)।
- वर्कशीट्स डिज़ाइन करके कक्षा में उनका उपयोग किया गया और इनके माध्यम से बच्चों का आकलन किया गया।

छह महीने तक यह सब करने के बाद हमें अच्छे परिणाम मिलने लगे, ख़ासकर उन स्थानों पर जहाँ फील्ड के शिक्षक रणनीति को समझकर कुछ संगतता के साथ काम करने में सक्षम थे। हमें उम्मीद थी कि यदि कक्षा I और II के बच्चों के इस समूह का परीक्षण बाद में, उनकी तीसरी कक्षा के अन्त में किया जाए तो तीसरी कक्षा के 2019 के एंड-लाइन स्कोर में बहुत सुधार होगा। किन्तु मार्च 2019 में परियोजना के समापन के कारण, आगे की ऐसी कार्यवाही करना सम्भव नहीं था।

इस अल्पकालिक प्रयोग से हम यह देख पाए कि ध्वन्यात्मक जागरूकता सम्बन्धी गतिविधियों में भाग लेना हमारी टीम के सदस्यों के लिए एक चुनौती थी। काफ़ी अनिश्चितता और झिझक रही। इससे हमें यह एहसास हुआ कि ध्वन्यात्मक जागरूकता जो सभी बच्चों के लिए पढ़ना सीखने का आधार है, जिसे सर्वप्रमुख स्थान देना चाहिए, जिसका महत्व हमने पहले ठीक से नहीं समझा था। इसके अलावा विशिष्ट अधिगम अशक्तता वाले बच्चों की मदद करने में इसका बहुत महत्त्व है। यह एक ऐसा महत्त्वपूर्ण मुद्दा था जिसे सीखना और अपने प्रशिक्षण कार्यक्रमों तथा सामग्री विकास कार्यशालाओं में साझा करना ज़रूरी था।

सभी बच्चों को सीखने में मदद करने के लिए मध्यप्रदेश के अन्य ब्लॉकों में अपने सभी प्रयासों में हम तामिया के प्रयोग से मिली सीखों को ध्यान में रखते हैं। हमने अपनी टीम के सदस्यों को, सीखने की विशिष्ट ज़रूरतों के मुद्दों की ओर प्रवृत्त करना शुरू कर दिया है। अब उन्होंने कम उपस्थिति और पारिवारिक पृष्ठभूमि को बच्चों की कठिनाईयों के लिए उत्तरदायी ठहराने की पुरानी रूपरेखा के परे जाकर उन बच्चों के बारे में अपने अवलोकन पर चर्चाएँ शुरू कर दी हैं जिन्हें वे कक्षा में संघर्ष करते हुए और पिछड़ा हुआ देखते हैं। उन्होंने केस स्टडी बनाना और विशिष्ट बच्चों के साथ आगे बढ़ने के तरीक़े तलाशने शुरू कर दिए हैं। उदाहरण के लिए टीम के एक सदस्य ने बताया कि एक-दूसरे से सीखने की प्रक्रिया में बच्चे के दोस्तों को शामिल करने से सकारात्मक परिणाम सामने आए हैं। अब सरकारी स्कूल के शिक्षकों और अपनी फील्ड की टीमों के साथ हमारे काम में ध्वन्यात्मक जागरूकता और संरचित साक्षरता वाले सत्र महत्त्वपूर्ण हो गए हैं। हमें उम्मीद है कि यह प्रयास सफल होंगे और हर बच्चा वास्तव में सीख सकेगा।

** बच्चों की पहचान छिपाने के लिए नाम बदल दिए गए हैं।*

रश्मि पालीवाल ने 1983 से 2019 तक होशंगाबाद में एकलव्य के साथ काम किया और स्कूल के सामाजिक विज्ञान और शिक्षक-शिक्षा के पाठ्यचर्या विकास में योगदान दिया है। उन्होंने एकलव्य के प्रकाशन सम्बन्धी प्रयासों के साथ-साथ ग्रामीण और आदिवासी समुदायों में प्राथमिक शिक्षा को मज़बूत करने की परियोजनाओं में भी सहायता की है। उनसे paliwal_rashmi@yahoo.com पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** नलिनी रावल